TEACHER TRANING COLLEGE

C-II Guidance & Counselling B.Ed - IInd Year

शिक्षा निर्देशन

व्यक्ति के इस महत्वपूर्ण प्रक्रिया में छात्रों को लाभान्वित कराने की दृष्टि शिक्षा में नितान्त आवश्यक है। कि शैक्षिक परिस्थितियों से सम्बन्धित समस्याओं के समाधान हेतु विद्यार्थियों को सक्षम बनाया जाए। शैक्षिक परिस्थितियों के समंजन की योग्यता के अभाव में शैक्षिक उद्देश्य की प्राप्ति कर पाना कठिन है। समंजन की यह योग्यता केवल उसी दशा में उत्पन्न हो सकती है जब विद्यार्थियों को अपने स्तर के अनुरूप योग्य बच्चों का उनकरण निरन्तर प्राप्त होता है। पाठ्यक्रम के उपयुक्त चयन, उपयुक्त अधिगम विधियों के उपयुक्त विद्यालयी पर्यावरण के समायोजन, चयन शिक्षण तकनीकी के ज्ञान, नवीन की प्रगति के विकास आदि के क्षेत्र में वांछित एवं समयानुसार सहायता प्रदान करता है। आत्म अनुदेशन शैक्षिक उपलब्धि को शिक्षा में निरन्तर अग्रसरण कराया जा सकता है।

शिक्षा निर्देशन का अर्थ

अनुभूति प्रयत्न है शिक्षा निर्देशन चेतना बौद्धिक विकास में जिसके द्वारा व्यक्ति के कोई भी चीज सहायता प्रदान की जाती है साथ की जाती है, शिक्षण या सीखने के आती है। शैक्षिक निर्देशन के अन्तर्गत

जॉन्स ने शिक्षा निर्देशन को चयन एवं समायोजन की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानते हुए लिखा है कि "शिक्षा निर्देशन वह व्यक्तिगत सहायता है जो छात्रों को इसलिए प्रदान की जाती है। कि वे अपने लिए उपयुक्त विद्यालय, पाठ्यक्रम, पाठ्य-विषय तथा पाठ्येत्तर क्रियाओं का चयन कर सकें तथा उनमें समायोजित कर सकें।"

आर्थर जे० जोन्स ने भी शाब्दिक रूप से, निर्देशन प्रभावशाली सीखने का अंग है। अतः शिक्षकों को परिस्थितियों के बुद्धिमतापूर्ण प्रबन्धन में निर्देशन करना चाहिए।

ब्रेवर ने शिक्षा निर्देशन से सम्बन्धित कई मूल विशेषताओं जैसे - छात्रों की योग्यताओं एवं ज्ञान शैक्षिक अवसरों के विस्तृत ज्ञान, कार्यक्रम के चयन व उसके लिए परामर्श आदि पर प्रकाश डालते हुए "शिक्षा निर्देशन का उद्देश्य व्यक्ति को उपयोगी कार्यक्रमों के चयन तथा उसमें प्रगति करने में सहायता प्रदान करना है।"

जी० ई० मायर्स के अनुसार → 'शैक्षिक निर्देशन एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक ओर व्यक्ति तथा उसके विशिष्ट गुण तथा दूसरी ओर अवसरों के विभिन्न समूह व माँग के मध्य व्यक्ति के विकास या शिक्षा के लिए अनुकूल परिस्थिति तैयार की जाती है।

d) अपनी पसंद के स्कूल में प्रवेश के लिये आवश्यक शर्तों से विद्यार्थियों को परिचित कराने में सहायता करना →

विभिन्न प्रकार के स्कूलों की अपनी अपनी पद्धति होती है। तथा इनके अपने नियम निर्धारित करते हैं। कुछ विद्यालयों में कुछ विशिष्ट विषयों की अनिवार्यता होती है, किन्हीं स्कूलों में कम से कम वांछित शैक्षिक योग्यता निर्धारित होती है, अतः इन स्कूलों की नियमावली आदि से परिचित कराना ही शैक्षिक निर्देशन का लक्ष्य होना चाहिए।

e) स्कूल के पाठ्यक्रम, स्कूल तथा स्कूल से जुड़े सामाजिक जीवन में समायोजन के लिये विद्यार्थी की सहायता करना →

स्कूल परिवर्तन के साथ ही विद्यार्थी नये वातावरण में प्रवेश करता है, इस नये वातावरण में उसे नया सामाजिक जीवन मिलता है, अब इस नये वातावरण में विद्यार्थी का समायोजन बहुत ही आवश्यक है।

f) प्रतियोगी परीक्षाओं सम्बन्धी सूचनाएँ प्राप्त करने में विद्यार्थियों को मार्गदर्शन देना

Exam - बिहार लोक सेवा आयोग, कर्मचारी चयन बोर्ड तथा विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश परीक्षाएँ इन परीक्षाओं के विषय में सम्पूर्ण जानकारी प्रदान करना अति आवश्यक है।

JANUARY				
M	30	2	9	16 23
T	31	3	10	17 24
		4	11	18 25
		5	12	19 26
F		6	13	20 27
S		7	14	21 28
S	1	8	15	22 29

Scanned with CamScanner

8) विद्यालय व्यवस्था तथा शिक्षण विधि में परिवर्तन के लिये

7) बाल अपराधियों की बढ़ती हुई संख्या के कारण

शैक्षिक निर्देशन के उद्देश्य या लक्ष्य या कार्य —

a) आगामी सम्भावित और इच्छित शिक्षा से सम्बन्धित सूचनाएँ प्राप्त करने में विद्यार्थियों को सहायता प्रदान करना —

अक्सर विद्यार्थियों के सामने भारतीय परिवेश में यह समस्या आती है कि पाँचवी, आठवीं तथा उच्चतर माध्यमिक कक्षा के पास करने के पश्चात् वे किस विद्यालय में दाखिला लें।

b) विभिन्न प्रकार के स्कूलों के कार्यों और उद्देश्यों को जानने में विद्यार्थियों को सहायता प्रदान करना — स्कूल भी विभिन्न पाठ्यक्रमों के कारण विभिन्न प्रकार के ही होते हैं। प्रत्येक प्रकार के स्कूल के अपने-अपने कार्य और लक्ष्य निर्धारित होते हैं। उदाहरणार्थ — बहु-उद्देशीय विद्यालय, औद्योगिक विद्यालय, चिकित्सा विद्यालय, व्यवसायिक विद्यालय तथा कृषि स्कूल इत्यादि।

c) स्कूलों द्वारा प्रदान की गई सुविधाओं के बारे में सूचना प्रदान करने में विद्यार्थी को सहायता प्रदान करना → जैसा कि पहले बताया गया है कि विभिन्न प्रकार के स्कूलों में तथा एक ही प्रकार के स्कूल में विभिन्न पाठ्यक्रम तथा विषय पढ़ाये जाते हैं।

Phone/Email/Note

Notes

FEBRUARY
6 13 20 27
7 14 21 28
8 15 22
9 16 23
10 17 24
11 18 25

Scanned with CamScanner

8) व्यवसायों के चयन में विद्यार्थियों को मार्गदर्शन देना :-

को किसी - न - किसी शिक्षा की समाप्ति पर व्यक्ति करना ही होता है। व्यवसाय में प्रवेश कई संख्या से व्यवसाय को बहुत प्रभावित हो सकता व्यक्ति का चयन करना के पश्चात व्यक्ति को कई बार समझ नहीं आता था वह यह निर्णय नहीं ले पाता कि उसे कौन - सा व्यवसाय अपनाना चाहिए प्रत्येक व्यवसाय से जुड़ी कई प्रकार की सूचनाओं के बारे में व्यक्ति को ज्यादा - सा भी ज्ञान नहीं होता।

b) विद्यार्थियों को स्वयं की पसंद, रूचियों तथा आवश्यकताओं का ज्ञान प्रदान करने में सहायता देना।

1) अध्ययन विधियों में सुधार का उद्देश्य -
a) कंठस्थ करने की विधि
b) पूर्ण एवं अंश विधि
c) दोहराने की विधि
d) अवकाश सहित तथा अवकाश रहित विधि
e) नोट बनाने की विधि
f) पठन विधि
g) रटने की विधि
h) सारांश करने की विधि।

Phone/Email/Notes

Notes

Scanned with CamScanner

03

निर्देशन व्यक्तिगत छात्रों की योग्यताओं, रुचियों, पृष्ठभूमि तथा आवश्यकताओं का पता लगाने की विधि प्रदान करता है।

शिक्षा निर्देशन की विशेषताएँ :-

* शिक्षा निर्देशन में छात्रों की योग्यताओं, क्षमताओं तथा रुचियों के अनुरूप शिक्षण अधिगम परिस्थितियों की व्यवस्था करना तथा सम्बन्धित समस्याओं का समाधान देना है।

* शिक्षा निर्देशन में छात्रों को उनकी योग्यताओं की जानकारी दी जाती है। उनकी कठिनाइयों तथा समस्याओं का निदान करके उनके अनुरूप सुधारात्मक अनुदेशन की व्यवस्था की जाती है।

* शिक्षा निर्देशन का उद्देश्य छात्र को शैक्षिक पाठ्यक्रम के चयन में सहायता प्रदान करना है। जिससे छात्र भावी जीवन में विकास कर सके।

* शिक्षा निर्देशन के छात्र विवेकपूर्ण प्रयास है, जिससे छात्रों के मानसिक एवं बौद्धिक विकास में सहायता दी जाती है।

* वह सभी अनुदेशन, शिक्षण तथा अधिगम की क्रियायें जो छात्र के विकास में सहायक होती हैं। शिक्षा निर्देशन की अंग होती हैं।

Scanned with CamScanner

शिक्षा और निर्देशन में सम्बन्ध

शिक्षा निर्देशन है –

a) शिक्षा एक व्यापक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया का प्रारम्भ समाज की आवश्यकता को ध्यान में रखकर ही किया जा सकता है। दूसरी ओर समाज के अपने भी कुछ आदर्श और लक्ष्य होते हैं, इन विधियों की सहायता से ही समाज के इन लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है। लेकिन ऐसा तभी संभव है, यदि अध्यापक स्वयं क्रियाशील हो। इस प्रक्रिया में विद्यार्थी निष्क्रिय रहता है। मनोवैज्ञानिक विकास से प्राप्त तथ्यों के आधार पर आजकल विचार धारा बन चुकी है।

b) शिक्षा सामाजिक कार्य → बिना शिक्षा के प्राणी मात्र प्राणी ही रह जाता है, मानव नहीं बन सकता। किसी प्राणी का नैतिक, सांवेगिक और बौद्धिक विकास में पथ-प्रदर्शन करना अनिवार्य है। यह कार्य समाज के विभिन्न उत्तरदायित्वों से एक है। विकास के उन पक्षों के लिये निर्देशन की आवश्यकता होती है।

c) परिवर्तन लाने वाली प्रक्रिया → आज की वर्तमान शिक्षा का मुख्य लक्ष्य है – बालक का सर्वांगीण विकास करना। शिक्षा के इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये निर्देशन सेवा सहायक सिद्ध होती है।

FEBRUARY

M		6	13	20	27
T		7	14	21	28
W	1	8	15	22	
T	2	9	16	23	
F	3	10	17	24	
S	4	11	18	25	
S	5	12	19	26	

Phone/Email/Notes

Notes

Scanned with CamScanner

जाॅन ने शिक्षा निर्देशन को चयन एवं समायोजन की दृष्टि से महत्वपूर्ण करते हुए लिखा है कि "शिक्षा निर्देशन वह व्यक्तिगत सहायता है जो छात्रों को इसलिए प्रदान की जाती है। कि वे अपने लिए उपयुक्त विद्यालय, पाठ्यक्रम, पाठ्य-विषय तथा पाठ्यत्तिरिक्त क्रियाओं का चयन कर सके तथा उनमें समायोजित कर सके।"

आर्थर जे० जोन्स के शैक्षणिक रूप से, निर्देशन प्रभावशाली सीखने का अंग है। अत: सीखने की परिस्थितियों के बुद्धिमतापूर्ण प्रबन्धन में निर्देशन करना चाहिए।

रूथ ने शिक्षा निर्देशन से सम्बन्धित कई मूल विशेषताओं जैसे- छात्रों की योग्यताओं एवं ज्ञान शैक्षिक अवसरों के विस्तृत ज्ञान, कार्यक्रम के चयन व उसके लिए परामर्श आदि पर प्रकाश डालते हुए "शिक्षा निर्देशन का उद्देश्य व्यक्ति को उपयोगी कार्यक्रमों के चयन तथा उनमें प्रगति करने में सहायता प्रदान करना है।"

जी० ई० मायर्स के अनुसार → शैक्षिक निर्देशन एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक और व्यक्ति तथा उसके विशिष्ट गुण तथा दूसरी और अवसरों के भिन्न समूह व माँग के मध्य व्यक्ति के विकास परिस्थिति तैयार की जाती थी शिक्षा के लिए अनुकूल की जाती है।